National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040; Impact Factor: RJIF 5.22
www.nationaljournals.com
Volume 1; Issue 2; May 2016; Page No. 12-14

असमीया साहित्य के इतिहास का रोमान्टिक काव्यधारा: एक अध्ययन (सन् 1889-1940 तक)

जयन्त कुमार बोरो

विभागाध्यक्ष एवं असिस्टेन्ट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, कोकराझार गवर्मेन्ट कॉलेज, कोकराझार, असम, भारत

सारांश

असमीया साहित्य में रोमामंटिक युग का प्रारम्भ सन् 1889 में प्रकाशित 'जोनकी' [1] पत्रिका के साधारणतः माना जाता है। रोमान्टिक युग या 'रोमान्टिस्जिम' [2] को असमीया साहित्य में एक साहित्यिक आन्दोलन के रुप में देखा गया। असम में इस युग को नवजागरण की संज्ञा के अभिहित किया गया। इस आन्दोलन का श्रीगणेश '*असमीया भाषा उन्नति साधिनी सभा*' से होता है। उन्नीसवीं शताब्दी के अस्सी के दशक में कलकत्ता में अध्ययनरत असमीया छात्रों ने इस सभा को जन्म दिया। प्रारम्भ में यह सभा उन छात्रों के मेल मिलाप करने के लिए प्रति शनिवार को आयोजित होने वाली एक साधारण सभा थी। कलकत्ता में आये हुये असम के सभी विद्यार्थी एक साथ सम्मिलित होकर मेल-मिलाप करते थे। 25 अगस्त, सन् 1888 में कलकत्ता में शहर के मध्य '*अ. भा. उ. सा. स.*' के नाम से एक विख्यात युगान्तकारी सभा का निर्माण किया। सभा के कम से कम बीस छात्रों के एक दल ने असमीया साहित्य में नवजागरण का चादर फैलाया। *चन्द्रकुमार अगरवाला, हेमचन्द्र गोस्वामी और लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा* इस दल के तीन प्रधान छात्र थे। इन तीनों छात्रों के अथक प्रयसों से ही सन् 1889 के जनवरी महीने में 'जोनाकी' नामक असमीया पत्रिका का प्रकाशन हुआ।

मूल शब्द: जोनाकी युग, रोमान्टिस्जिम, नवजागरण आदि।

प्रस्तावना

असमीया साहित्य के इतिहास में रोमांटिक युग का अपना एक विशिष्ट महत्व रहा है। रोमान्टिक साहित्य मूलतः कविता पर आधारित है। कविता पक्ष ही इस धारा के पक्ष में थी। इसका अभिप्राय यह कदापि नहीं है कि इस युग में साहित्य की ओर विधाओं में जैसे लघुकथा, उपन्यास, नाटक आदि में इसका प्रभाव नहीं पड़ा। रोमान्टिक साहित्य की क्रिया और प्रतिक्रिया कमोवेश साहित्य का लगभग सभी विधाओं में परिलक्षित होता है। किन्तु कविता के क्षेत्र में इसका सफल रुप अधिक दिखाई पड़ता है। असमीया साहित्य की ओर विधाओं पर लेखन का कार्य और आधुनिक कला कौशल रोमान्टिक युग से ही प्रारम्भ होता है। इस युग के पूर्व असमीया साहित्य में मध्य युग का समय रहा, जिसके केन्द्र में वैष्णव धर्म था। परवर्ती असमीया साहित्य में एक और युग परिलक्षित होता है जिसे '*अरुणोदय युग*' [3] के नाम से जाना जाता है। इस युग ने ईसाई धर्म का प्रचार रुपी पथ को छोड़कर प्रकृत अर्थ में एक धर्म-निरपेक्ष परम्परा को स्थापित करने का प्रयास किया। रोमान्टिक युग ने असमीया साहित्य को एक नवीन पथ प्रदर्शन किया।

उद्देश्य

प्रस्तुत आलेख के उद्देश्य के माध्यम से यह स्पष्ट करना है कि असमीया साहित्य में रोमान्टिक काव्यधारा की एक लम्बी अवधि रही है। लगभग पचास वर्ष (1889-1940) की एक लम्बी अवधि को असमीया साहित्य जगत में रोमान्टिक युग के नाम से जाना गया। यानि की पाँच दशकों तक रोमान्टिक कविता धारा को असमीया काव्य में देखने को मिलता रहा हैं। हिन्दी साहित्य में रोमान्टिक युग का सन् 1920 ई. से सन् 1936 ई. के कालावधि को माना गया। असमीया रोमान्टिक काव्य धारा में त्रिमूर्ति कवियों (चन्द्रकुमार अगरवाला, हेमचन्द्र गोस्वामी और लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा) का एक सुमधुर संगम है। इस युग में 'जोनाकी', 'बाँही' नामक पत्रिकाओं का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। ठीक इसी भाँति हिन्दी साहित्य के रोमांटिक युग में चार कवियों *जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानन्दन पंत, महादेवी वर्मा और सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'* आदि का आविर्भाव हुआ। जिसे हिन्दी छायावाद के चार स्तम्भ भी कहाँ जाता है। असमीया साहित्य के रोमान्टिक काव्यों को हिन्दी के साथ जोड़कर देखा जाए मणिकांचन योग बनता। अतः अभिप्राय यही है कि असमीया रोमान्टिक काव्य अपने आप में विशिष्ट है। इसका अध्ययन आज भी अपेक्षित है।

शोध विधि

प्रस्तुत लेख की विषय वस्तु के अध्ययन के लिए विशलेषणात्मक पद्धति को अपनाया गया है तथा यह विषय समीक्षात्मकता पद्धति की भी मांग रखता है।

शोध सामाग्री

प्रस्तुत आलेख की शोध सामाग्री विविध प्रकार के लेखों और साहित्य के सर्वेक्षण के आधार पर प्राप्त किया गया गया है। असमीया साहित्य के विविध ग्रन्थों में से आलेख को पुरा करने के लिए काफी मद् मिली है।

असमीया साहित्य के इतिहास का रोमान्टिक युग:

असमीया साहित्य में '*रोमान्टिक*' शब्द कविता के एक विशेष काव्यधारा के लिए प्रयोग किया जाता है। यह विशेषण असमीया साहित्य में अपने स्वरुप को विस्तार कर रहा था। यह तो स्पष्ट हो गया है कि जोनाकी प्रत्रिका के माध्यम से असमीया साहित्य में रोमान्टिक युग का सुत्रपात होता है। परन्तु कुछ लोग जैसे- 'भोलानाथ दास', 'रमाकान्त चौधरी' और 'कमलाकान्त भट्टाचार्य' आदि इस क्षेणी की कविता को इस युग से कुछ ओर आगे ले जाते है। उपर्युक्त तीनों व्यक्तियों को 'पूर्व जोनाकी युग' या 'पूर्व रोमान्टिक युग' (प्राक् जोनाकी युग) की कवि के रुप में चर्चा की जाती है। इसी 'प्राक् जोनाकी युग' को ही असमीया साहित्य में '*अरुणोदय युग*' के नाम से जाना जाता है। 'भोलानाथ दास' और 'रमाकान्त चौधरी' की प्रसिद्धि यहीं रही है कि इन दोनों ने ही सबसे पहले असमीया काव्य में 'अमित्राक्षर छन्द' का प्रयोग किया था। 'मुक्तक छन्द' को ही असमीया में 'अमित्राक्षर छन्द' कहाँ जाता है।

'भोलानाथ दास' का '*सीताहरण काव्य*' और 'रमाकान्त चौधरी' की '*अभिमन्युर बध काव्य*' इसके श्रेष्ठ उदाहरण है। इनके पश्चात् 'कमलाकान्त भट्टाचार्य' का स्मरण एक प्रतिभाशाली कवि के रुप में की जाती है। उनकी कविताओ में ही सबसे पहले पाश्चात्य विचारधारा अभिव्यक्त हुआ है। असमीया साहित्य के इतिहास में 'कमलाकान्त भट्टाचार्य' एक नवीन युग के सम्वाहक और पूर्व रोमान्टिक युग के प्रसिद्ध कवि के रुप में गणना की जाती है। उन्होंने '*अरुणोदय युग*' (पूर्व रोमान्टिक युग) जोनाकी युग' (रोमान्टिक युग) के मध्य एक सेतु का काम किया है। *अरुणोदय युग*' के पश्चात् 'चन्द्रकुमार अगरवाला' (1867-1938), 'लक्ष्णीनाथ बेजबरुवा' (1864-1938) और 'हेमचन्द्र गोस्वामी' (1872-1928) को 'जोनाकी युग' के

त्रिमुर्ति कवि के रुप में परिचित हेने लगे । इनमें से 'चन्द्रकुमार अगरवाला' को 'असमीया रोमान्टिक युग' का प्रवर्तक माना जाता है।

असमीया 'जोनाकी' पत्रिका (सन् 1889) के प्रथम अंक में चन्द्रकुमार अगरवाला की कविता '*बनकुँवरी*' नामक कविता प्रकाशित हुई । इस कविता को असमीया साहित्य की प्रथम रोमान्टिक कविता के रुप में स्वीकार किया जाता है। इस कविता से ही असमीया रोमान्टिक साहित्य की शुरुवात होती है । '*प्रतिमा*' चन्द्रकुमार अगरवाला की प्रथम काव्य संकलन है और दूसरी '*बीनबरागी*' । '*प्रतिमा*' का प्रकाशन सन् 1913 में और '*बीनबरागी*' का प्रकाशन सन् 1927 में हुआ। इनकी रचनाओं की संख्या कम है, किन्तु लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा ने उनके काव्य संकलन प्रतिमा के सम्बन्ध में कहाँ है कि '*प्रतिमाखनि खरु किन्तु निभाज खोनर*' । अर्थात् निश्चित रुप से प्रतिभा काव्य संकलन छोटी है परन्तु वह विशुद्ध सोने की है। उनकी 'नियर' (अर्थात् ओस), 'माधुरी', 'तेजीमला', '*बनकुँवरी*' आदि कविताओं में सौन्दर्य का अनुठा प्रकाश प्रतिफलित हुआ है। एक सफल कविता बहुत कम कवि ही कर पाने में सक्षम है इस क्षेत्र में चन्द्रकुमार अगरवाला को काफी सफलता मिली है । मानवताबोध चन्द्रकुमार अगरवाला की कविताओं की प्रमुख विशेषता रही है । मानवताबोध उनके कविताओं में जिस प्रकार प्रस्फुटित हुआ वैसा अन्य असमीया कवियों की कविताओं में आज तक देखने को नहीं मिला।

अगरवाला के पश्चात् लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा को असमीया रोमान्टिक कवि के रुप में स्मरण किया जाता है । असमीया साहित्य के रोमान्टिक आन्दोलन एवं जोनाकी युग के त्रिमूर्ति कवियों में अन्यतम कवि है। बेजवरुवा की काव्य संकलन कदमकलि के नाम से सन् 1919 में प्रकाशित हुआ। बाद में इधर-उधर प्रकाशिक कविताओं के संकलित कर पदुम कलि नाम से एक कविता संकलन तैयार किया गया है। बेजवरुवा ने लग ने लगभग सो से लेकर एक सो बीस तक कविताओं की रचन की । बेजवरुवा की कविताओं में प्रेम-प्रीति, नीति-उपदेश, आध्यात्मिक भाव, जातीयता का भाव एवं व्यंग्य आदि विशेषताएँ देखने को मिलती है। इन विशेषताओं को केन्द्र में कर उनकी कविताओं को चार भागों में विभीजित किया जा सकता है- 1. प्रेम-प्रीति पर आधारित कविता, 2. जातीय भाव बोध की कविता, 3. नीति एवं धर्म पर आधारित कविता, 4. व्यंग्य कविता । इनमें से प्रथम दो विशेषताओं की कविताओं के प्रणयन में अधिक सफलता प्राप्त की है। उनमें से कुछ कविताओं के सम्बन्ध में असमीया साहित्य के विद्वान महेश्वर नेऊग ने कहाँ था कि– '*खोनपानीर छपाई बन्धाई थबलगीया*' । अर्थात् उन कविताओं को सोने का पानी चढ़ा कर मढ़हाकर रखने लायक है। लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा एक ऐसे साहित्यकार है जिन्होंने असमीया जातीय जीवन को गति प्रदान करने के लिए अविराम एवं अथक प्रयास किया है। उनके दो काव्य ग्रंथ है पहला '*कदमकलि*' (1913) बेजबरुवा जी द्वारा रचित ***'कविता हय जदि हउँक, नहय जदि नहउँक'*** [4] (अर्थात् कविता हुआ तो हुआ, नहीं तो नहीं) कहकर लिखी गई कविताओं का एक महत्वपूर्ण संकलन है। जिसमें *'सखीर प्रति', 'मईना', 'प्रियतमा', 'भ्रम', 'बाँही', 'चन्द्र' (गीत), 'कुलि' (गीत), 'आमार जन्मभूमि' (गीत), 'मोर देश' (गीत) 'बिहु', 'प्रेम', 'धनबर आरु रतनी' आदि कवितायें संकलित है ।* उनके दूसरे महत्वपूर्ण काव्य संकलन *'पदुमकलि' में 'असम संगीत', 'ब्रह्मपुत्र संगीत', 'संन्ध्या', 'प्रियतमा', 'कविता', 'बसन्त', 'जार, पदुम पातर पानी', 'विश्रृंखल',' बिरह', 'बरदैचिला', 'धूलि', 'बाँही', 'सागर संगीत'* आदि कवितायें संकलित हैं । और दूसरा काव्य ग्रंथ 'पदुमकलि' है जो उनके मृत्यु के पश्चात् प्रकाशित काव्य संकलन है।

असमीया रोमान्टिक काव्य धारा की प्रथम स्तर के कवि के रुप में 'हेमचन्द्र गोस्वामी' का नाम लिया जाता है । हेमचन्द्र गोस्वामी 'जोनाकी युग' अर्थात् असमीया रोमान्टिक युग के त्रिमूर्ति कवि में से एक है। उनकी एक मात्र काव्य संकलन '*फलर साकी*' सन् 1907 में प्रकाशित हुआ । इस संकलन की कवितायें 'जोनाकी' और 'आमारबन्धु' पत्रिका में अकसर प्रकाशिक होती रहती थी। जोनाकी के प्रथम वर्ष के दूसरे अंक में *'काको आरु हिया निविलाउ' (अर्थात् किसी ओर हृदय नही बातुगाँ।)* कविता के माध्यम से इस युग में प्रवेश किया। इसी को जोनाकी युग की प्रथम प्रेम पर आधारित कविता के रुप में स्वीकार किया जाता है। रोमान्टिक युग के कवि हेमचन्द्र की विशेषता यह रही है कि *'उन्होंने असमीया कविता में चतुर्थदशी कविता या सनेट शैली में काव्य लिखने की परम्परा की नींव डाली'* । जोनाकी में प्रकाशित हेमचन्द्र गोस्वामी की कविता '*प्रियतमार चिठि*' (अर्थात् प्रियतम की चिट्ठी) शीर्षक की कविता 'सनेट शैली' में लिखी गई प्रथम असमीया कविता है । असमीया रोमान्टिक युग के प्रथम स्तर के कवियों के अलावा और अन्य कुछ कवियों को इसमें देखा जा सकता है। जैसे- 'पद्मनाथ गोहाईबरुवा', 'मफुजुद्दिन आहमद हजारिका', 'आनन्दचन्द्र अगरवाला' और 'हितेश्वर बरबरुवा' आदि। पद्मनाथ गोहाईबरुवा के तीन काव्य ग्रंथ है- *'लीलाकाव्य', 'फुलर चानेकि', और 'जुरनि'* आदि । '*ज्ञानमालिनी*' मफुजुद्दिन आहमद हजारिका का एकमात्र काव्य ग्रंथ है। '*जिलिकनी*' आनन्दचन्द्र अगरवाला का एकमात्र काव्य ग्रन्थ है। '*मालच*' और '*चकुलोय*' ये दोनो हितेश्वर बरबरुवा की 'सनेट शैली' में रचित काव्य ग्रन्थ हैं।

'रघुनाथ चौधरी' असमीया रोमान्टिक युग के द्वितीय स्तर के अग्रणी कवि है। रघुनाथ एक प्रकृति प्रेमी कवि रहे है। उन्होंने अपने '*चड़ाई*' (अर्थात् चिड़ियाँ) काव्य संकलन के माध्यम से असमीया रोमान्टिक काव्य कोष को सुशोभित कर दिया। रुपक, यमक, उपमा, अनुप्रास आदि अलंकारों से युक्त उनकी कविताओं के साधारण लक्षण और विशेषताएँ रही है। *'सादरी', 'दहिकतरा', 'केतेकी कारबाला'* और *'नवमल्लिका'* आदि *रघुनाथ चौधरी* की काव्य रचनायें हैं। इस स्तर के एक अन्य श्रेष्ठ कवि '*दूर्गेश्वर शर्मा*' है । निःसन्देह वे एक असमीया दार्शनिक कवि है। *दूर्गेश्वर शर्मा की भाँति नीलमणि* फुकन को भी दार्शनिक कवि के रुप में जाना जाता है। उनकी कविताओं की एक विशेषता यह है कि उन्होंने हमेशा सत्य और सुन्दर को एक ही पात्र में रखने का प्रयास किया है। *दूर्गेश्वर शर्मा* के पश्चात् इस स्तर के एक अन्य विशिष्ट कवि '*अम्बिकागिरि रायचौधरी*' है। इनके काव्य में दो विशेषतायें परिलक्षित होती है। पहली विशेषता *विपल्वी चिन्तनधारा* और दूसरी विशेषता *रहस्यमय आध्यात्मिकता की अभिव्यक्ति ।* विद्रोहात्मकता चिन्तन और स्वदेश प्रेम की अपूर्व समाहारता उनकी कविताओं में शक्तिशाली रुप में प्रस्फुटित है। उनकी 'तुमि' (अर्थात तुम) कविता में एक प्रेमी की यौवन के स्वप्न के माध्यम से अनन्त के प्रति प्रेम भावना को अभिव्यक्त किया गया है। उनकी प्रिया का रुप किस प्रकार क्रमिक रुप से धीरे-धीरे विकसित होकर विविध स्तरों के माध्यम से होते हुये भगवान के प्रेम में परिणत होता है। उसका विचित्र वर्णन उनकी कविता तुमि में हुआ है। *अम्बिकागिरि रायचौधरी* की कुछ रचनायें हैं जैसे- *'तुमि', 'वीना', 'अनुभूति', 'बन्दो कि छन्देरे', 'देखेई भगवान', और 'वेदनार उल्का' आदि।*

रोमान्टिक कवियों में असमीया कवि *जतीन्द्रनाथ दूवरा* का भी नाम लिया जाता है। इनकी कवितायें सरल और हृदयस्पर्शी है। उनकी कवितायें मधुर, कोमल, करुण रस से युक्त और आत्मकेन्द्रित है । *जतीन्द्रनाथ दूवरा* असमीया काव्य जगत में प्रेम के कवि के रुप में परिचित है। उनकी कवितायें व्यकितगत प्रेम की नीजी अनुभूतियों और करुण रस की अभिव्यक्तियों से भीगे हुआ है। उनकी कविताओं में प्रेम की विफलतायें करुण कलित हृदय में हाहाकार कर उठती है। कवि के चारों ओर सिर्फ और सिर्फ शुन्यता और अतीत की स्मृतियाँ ही शेष रह गयी है। उन स्मृतियों को भुला देना ही उनके जीवन में उससे उबरने का एक मात्र उपाय रह गया था। कभी-कभी यह भी देखा गया है कि इस प्रकार की अभिव्यक्तियों के वजह से उन्हें निराशावादी, पलायनवादी कहकर सम्बोधित किया जाने लगा । '*आपुनोरसूर*', *(अर्थात् अपनो का सूर), 'बनफुल', और 'मरमर सूर' (स्नेह का सूर),* उनकी अन्यतम काव्य रचना है । '*बनफुल*' काव्य रचना के लिए उन्हें सन् 1955 में '*साहित्य अकादमी*' से सम्मानित किया गया। दूवरा जी ही प्रथम असमीया साहित्यकार है जिन्हें साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त हुआ। असमीया रोमान्टिक काव्य के प्रसंग में *रत्नकान्त बरकाकती* का नाम भी लिया जाता है। वह असमीया काव्य साहित्य जगत में '*शेवाली* कवि' के नाम से प्रसिद्ध है। उनके काव्य में अभिव्यक्त प्रेम कभी देहिक प्रेम को अतिक्रमण करते हुये सम्पूर्ण विश्व को समाहित कर लिया है और कभी मानवीय स्तर से होते हुये अतीन्द्रीय तक पहुँच गया है । दार्शनिकता की हल्की भावना उनकी कुछ-कुछ कविताओं में गम्भीर हो उठी हैं। '*तर्पन*', '*शेवाली*' और 'चन्द्रहार' उनकी तीन काव्य रचनायें हैं। '*नलिनीबाला देवी*' असमीया रहस्यवादी

काव्यधारा की श्रेष्ठ कवयित्री है। अपनी व्यक्तिगत जीवन की करुणा ही उनके काव्य में रहस्यवादी भावना बनकर उभरकर आयी है। रहस्यवादी भावना ही उनके काव्य प्रणयन का मूल उद्देश्य रहा है। *नलिनीबाला देवी* की काव्यत्मक दृष्टिकोण और अतिन्द्रीयतावादी बनने के पीछे गीता, उपनिषद्, असमीया वैष्णव साहित्य और रवीन्द्रनाथ की कविताओं आदि के अध्ययन ने ईधन का काम किया। उन्हें पद्मश्री की उपाधि से और साहित्य अकादेमी की पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। 'सपोनर सूर' (अर्थात् सपनों का सूर), '*सन्धियार सूर*' (अर्थात् सन्ध्या का सूर), *'परखमणि' (अर्थात् पारसमणि), 'अल्कानंदा', 'अंतिमसूर', 'युगदेवता', 'जागृति'* आदि काव्य रचनायें हैं। जो उनकी काव्य कानन को सुशोभित करता है।

असमीया रोमान्टिक काव्य का तृतीय स्तर पतन का युग है। जिसे असमीया साहित्य में '*रमन्यासवादर अवक्षर*' का युग कह कर पुकारा गया। इस समय की कवितायें क्षणे-क्षणे रोमान्टिक विचार धारा हटने लगी थी। *ज्योतिप्रसाद अगरवाला, गणेश गोगई, देवकान्त बरुवा* इस स्तर के उल्लेखनीय कवि है। ज्योतिप्रसाद की कविताओं में स्वदेश के प्रति अनुराग और प्रगतिशील चिन्तन धारा, सौन्दर्यबोध, मानवताबोध, शोषण के प्रति घृणा का भाव अभिव्यक्त होने लगा था। *गणेश गगोई* के काव्य में प्रेम के रुप का दर्शन होते है। *गणेश गोगई* की कविताओं में *जतीन्द्रनाथ दूवरा* की तरह मधुर, कोमल और करुणा की भावना परिलक्षित होती है। किन्तु *गोगई* का प्रेम तुलनात्मक दृष्टिकोण दूवरा से अधिक इन्द्रियग्राह्य और प्रेम का देहिक आकर्षण अधिक दिखता है। *देवकान्त बरुवा* संधि काल के कवि के रुप में जाने जाते है। 'सागर देखिसु' उनकी एकमात्र काव्य संकलन है। यह काव्य संकलन असमीया साहित्य की अनुपम रचनाओं में से एक है। *देवकान्त बरुवा* का एक पैर द्वितीय विश्वयुद्ध के समय की रोमान्टिक चीढ़ी पर और दूसरी पैर युद्ध के पश्चात् एक नवीन युग के सोपान पर रखा हुआ था। असमीया काव्य साहित्य के इतिहास में उन्हें एक '*तामसिक कवि*' की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। उनकी कविताओं में इन्द्रजनित प्रेम उभर कर सामने आया है। असमीया कविता के क्षेत्र में उन्होंने नवीन छन्द और आधुनिक कला कौशल के प्रयोग से युगान्तर की सृष्टि की है। *देवकान्त बरुवा* की कविताओं से ही असमीया रोमान्टिक काव्य की समाप्ति की सुचना का संकेत मिलता है। मूलतः *देवकान्त बरुवा* संक्रान्ति काल के कवि के साथ-साथ नवीन युग के पथ प्रदर्शक भी है। उनकी कविताओं में आधुनिकता का सूचना अधिक मिलता है। जिस कारण उन्हें एक युगद्रष्टा कहाँ जाने लगा। आधुनिकता की सारी विशेषतायें उनके काव्य में विद्यमान है।

उपसंहार

उपर्युक्त विशलेषण के द्वारा यह कहाँ जा सकता है कि सन् 1889 से 1940 तक के असमीया साहित्य के विशद् एवं वृहद काल खण्ड को *असमीया साहित्य के रोमान्टिक युग* के रुप में अध्ययन किया जाता है। लगभग 51 वर्ष का काफी लम्बा समय असमीया साहित्य में रोमान्टिक युग के नाम से जाना गया। इस युग की समीक्षा से विविध पहलु हमारे सामने उभर कर आता है। द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् इस काव्यधारा की समाप्ति की सूचना मिलती है। यह युग असमीया साहित्य जगत में एक आन्दोलन के रुप समाने उभर कर आया। इस साहित्यिक आन्दोलन का विकास कलकत्ता के कॉलेजों में अध्ययनरत असम के विद्यार्थियों ने किया। चन्द्रकुमार अगरवाला, हेमचन्द्र गोस्वामी और लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा इन तीन प्रमुख असमीया कवियों की महत्वपूर्ण रही है। जोनाकी पत्रिका ने भी इन आन्दोलन को विकसित करने में काफी योगदान दिया।

पाद टिप्पणी

1. सन् 1889 ई. में प्रकाशित असमीया पत्रिका है। जो छः वर्षों के प्रकाशन के बाद बन्द हो गया। फिर सन् 1901 में पुनः प्रकाशित हुआ। इस पत्रिका के प्रथम सम्पादक चन्द्रकुमार अगरवाला थे। जिसे असमीया रोमान्टिक काव्य धारा के प्रवर्तक होने का श्रेय जाता है।
2. Romanticism (also the Romantic era or the Romantic period) was an artistic literary, and intellectual movement that originated in Europe towards the end of the 18 th century and in the most areas was at its peak in approximate period from 1800 to 1850. It was partly a reaction to the Industrial Revolution, the aristocratic social and political norms of the Age of Enlightenment, and the scientific rationalization of nature. Romanticism- Wikipedia, the free encyclopedia online.
3. The name of the first Assamese Journal published in the year 1846.
4. भूमिका (कदमकलि से), बेजबरुवा ग्रन्थावली, (तृतीय खण्ड), सम्पादक -नगेन शइकीया पृष्ठ संख्या- 3.

संदर्भ सूची

1. शर्मा, डॉ. सत्येन्द्रनाथ, लखेक, असमीया साहित्यर समाक्षात्मक इतिवृति, (नवम संस्करण 2001), प्रकाशक- प्रतिमा देवी, रिहाबारी, गुवाहाटी- 8, असम।
2. बोरा, डॉ. हेम, लेखक, रमन्यासवादः असमीया कविता आरु कुरिजन प्रधान कवि, प्रथम संस्करण 2013), प्रकाशक- श्री अजय कुमार दत्त, स्टुडेन्ट स्टोर, कलेज होस्टेल रोड, गुवाहाटी-01,असम।
3. बरुवा, हेमचन्द्र, लेखक, हेमकोष, (प्रथम संस्करण- 1900, और चोदहवीं संस्करण- 2011) प्रकाशक- दिवानन्दा बरुवा, हेमकोश प्रकाशन, एम. आर. दीवान पथ, चान्दमारी, गुवाहाटी- 03, असम।
4. शइकीया, नगेन, सम्पादक, बेजबरुवा ग्रन्थावली, (प्रथम और तृतीय खण्ड), संस्करण-2010, प्रकाशक- बनलता, जसवन्त रोड, पानबजार, गौहाटी- 01, असम।